(1)

प्रश्न: - प्राचीन गीतावलीक आधार पर चतुर चतुर्भुजक काव्य रचनाक संक्षिप्त परिचय दिअ !

उत्तर: मैथिली साहित्यमे चतुरचतुर्भुजक स्थान एक उत्कृष्ट कविक रूप मे अछि। यद्यपि एखन धरि हिनक निर्विवाद परिचय नहि अछि। परंच काव्य रचना केँ आधार पर गोविन्ददास आ उमापतिक समकक्ष हिनक रचना अछि। हिनक रचना निश्चित रूपसँ उच्चकोटिक अछि, परंच मर्मज्ञ पाठकक हेतु जनसाधारणक लेल नहि।

चतुरचतुर्भुज मध्यकालक कवि मानल जाइत छथि। एहि अवधि मे तीन गोट चतुर्भुजक उल्लेख भेटैत (1) संस्कृत काव्य हरिचरित क रचयिता चतुर्भुज। हरिचरितक हस्तलेख 16म शताब्दीक प्रथम चरणमे भानुजाक लिखल अछि। डॉ० जयकान्त मिश्र हिनकहि चतुर्भुज कवि मानैत छथि।(2)1630 ई० ल० स० छा।
* वाचस्पतिक सुधा निर्णयक प्रतिलिपिकार चतुर्भुज भेलाह।

Scanned with CamScanner

तेसर बेटि रघुनन्दनक द्वितीय पत्नीसँ उत्पन्न चतुर्भुज शर्मा प्रो॰ रमानाथ झा हिनकासँ मैथिलीक कवि चतुर्भुज मानैत छथि। हिनक कविताक भाषा, वर्ण्य विषय, आ साहित्यकारों होति डॉ॰ जयकान्त मिश्र आ डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झाक विचार तर्कसंगत बुझना जाइछ। जे संस्कृत काव्य 'हरिचरित' के रचयिता चतुर्भुज मैथिली भाषाक कवि सेहो छलाह।

मिथिलेश द्वारा प्रकाशित चतुर्चतुर्भुजक पदक भाषा आ भाव द्रुत सरल अछि। यथा - एक नवोढ़ाक मनोभावक विश्लेषण कोना कवि करैत छथि!

हृदय धारिअ अति गोए, माधव नमन देकत तत होए।

चतुर्चतुर्भुज भान, माधव प्रेम न होअ पुरान।

हिनक एक पद रागतरंगिणीमे उपलब्ध अछि। एकटा
एक पद जगज्योतिर्मल्लक 'हरगौरी विवाह' नाटकमे
प्रयुक्त भेटल अछि। प्रो० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित
'भाषगीत संग्रहमे' हिनक एगारह गोट पद अछि। डॉ०
शैलेन्द्र मोहन झा एहि सभ गीतक अतिरिक्त तीन गोट
आओर नवीन गीतक अन्वेषण कए 'गीत सप्तपदी'
प्रकाशित करौलनि।

मानक गीतमे प्रमातवर्णन कोटि औ प्रातःकालमे
चन्द्रमाक अस्त होएबाक कालमे ताराणक क्रमिक
लुप्त होएबाक केहन सुन्दर कल्पना कैलनि
अछि से देखू :-

पड़ल कुसुम जनि रतन विभूषण तारागन
आसिके।
बारुनि मगन ससि पर गिरि चलु निसि
कलक कमटें कए अंके।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N College, Pandaul
Madhubani

Scanned with CamScanner